राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
बिहार लोक भवन, पटना–800022

प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या–59/2026

राज्यपाल ने डेवलपमेंट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट के दीक्षांत समारोह को संबोधित किया

पटना, 18 अप्रैल, 2026 :– माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सय्यद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) ने डेवलपमेंट मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, पटना के दीक्षांत समारोह में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि "जिज्ञासा" सफलता और नेतृत्व का मूल तत्व है। उन्होंने कहा कि यह समारोह केवल डिग्रियों के वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के जीवन में एक महत्वपूर्ण संक्रमण बिंदु है, जहाँ वे तैयारी के चरण से निकलकर जिम्मेदारी निभाने के दौर में प्रवेश करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे नियमों और प्रक्रियाओं की गहराई को समझें तथा उनमें निहित संभावनाओं का समाज के हित में अधिकतम उपयोग करें।

उन्होंने महात्मा गांधी के मोतिहारी के ऐतिहासिक प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि सही और गलत का निर्णय केवल अनुमति या निषेध के आधार पर नहीं, बल्कि अंतरात्मा की आवाज़ के आधार पर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक जीवन में कई बार आसान और सही रास्ते अलग–अलग होंगे, ऐसे में सही निर्णय लेने का साहस ही सही नेतृत्व की पहचान है।

राज्यपाल ने आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य का उल्लेख करते हुए कहा कि आज की दुनिया अत्यंत जटिल और अनिश्चितताओं से भरी हुई है, जिसे अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक हलकों में "ग्रे ज़ोन" के रूप में समझा जा रहा है। इस बदलती हुई दुनिया में स्पष्ट सोच, विवेक और आत्मनिर्णय की क्षमता अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने नेतृत्व के गुणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि केवल नियमों का पालन करने वाला व्यक्ति "ट्रांज़ैक्शनल लीडर" बन सकता है, लेकिन समाज में वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए "ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप" की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि सही नेतृत्व वही है, जो किसी भी परिस्थिति की जड़ तक जाकर उसे बेहतर रूप में परिवर्तित करने का प्रयास करे।

राज्यपाल ने "सुनने की क्षमता" को नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता बताते हुए कहा कि दूसरों के अनुभवों से सीखने की क्षमता व्यक्ति को अधिक सक्षम बनाती है। उन्होंने कहा कि एक अच्छा नेता वही होता है, जो संवाद के साथ–साथ धैर्य और संतुलन बनाए रखे।

उन्होंने "ओनरशिप" (जिम्मेदारी लेने) के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जब तक व्यक्ति किसी कार्य की पूर्ण जिम्मेदारी नहीं लेता, तब तक वह प्रभावी और परिवर्तनकारी परिणाम नहीं दे सकता। उन्होंने कहा कि परिवर्तन एक धीमी और सतत प्रक्रिया है, जिसके लिए धैर्य, दृढ़ता और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

राज्यपाल ने सहानुभूति (Empathy) को नेतृत्व का एक अनिवार्य गुण बताते हुए कहा कि एक सफल नेता वही है, जो अपने साथ काम करने वाले लोगों की क्षमताओं को पहचाने और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करे। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों के साथ–साथ समाज और अपने आसपास के लोगों के विकास पर भी ध्यान दें।

राज्यपाल ने उपाधि प्राप्त करनेवाले सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देते हुए आशा व्यक्त की कि वे अपने ज्ञान, मूल्यों और नेतृत्व क्षमता के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

इस अवसर पर ग्रामीण विकास विभाग के साचिव श्री हिमांशु शर्मा, विकास प्रबंधन संस्थान सोसाइटी के अध्यक्ष श्री भानु प्रताप शर्मा, संस्थान के निदेशक प्रो० देवी प्रसाद मिश्रा व डीन शैक्षणिक प्रो० शंकर पूर्वे, बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सदस्यगण, उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राएँ व उनके अभिभावकगण, शिक्षकगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

…………………………………….